International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-13

सांस्कृतिक विरासत : खजुराहो का लक्ष्मण मंदिर

डॉ. विनय कुमार
असि. प्रोफ़ेसर, इतिहास
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांदा, उत्तर प्रदेश
Email- vinay.net2012@gmail.com

शोध सार

भारत विश्व की प्राचीनतम और समृद्धतम सभ्यताओं में से एक है। यहाँ की सांस्कृतिक विरासत केवल भौतिक स्मारकों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन-दर्शन, धार्मिक विश्वास, कलात्मक अभिव्यक्ति, सामाजिक संरचना और ऐतिहासिक चेतना का एक व्यापक समुच्चय है। भारतीय संस्कृति की विशेषता यह रही है कि,उसने विभिन्न कालखंडों में कला, धर्म और दर्शन को एक सूत्र में पिरोकर एक अद्वितीय परंपरा विकसित की। इसी परंपरा का एक अनूठा उदाहरण मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित खजुराहो के मंदिर समूह हैं। खजुराहो के मंदिर केवल पत्थर की संरचनाएँ ही नहीं हैं, बल्कि ये भारतीय जीवन-दृष्टि, सौंदर्य-बोध और दार्शनिक चिंतन के मूर्त रूप हैं। इन मंदिरों में स्थित लक्ष्मण मंदिर स्थापत्य, मूर्तिकला और धार्मिक प्रतीकात्मकता की दृष्टि से सर्वोच्च स्थान रखता है। यह मंदिर न केवल खजुराहो समूह का प्राचीनतम एवं सर्वाधिक संरक्षित मंदिरों में से एक है, बल्कि यह तत्कालीन चंदेलकालीन समाज की सांस्कृतिक चेतना का भी प्रामाणिक दस्तावेज है। लक्ष्मण मंदिर की भव्यता, इसकी जटिल स्थापत्य संरचना, मूर्तियों की सजीवता और धार्मिक प्रतीकात्मकता इसे भारतीय सांस्कृतिक विरासत का एक अमूल्य रत्न बनाती है।

बीज शब्द - खजुराहो, लक्ष्मण मंदिर, चंदेल, यशोवर्मन, सांस्कृतिक केंद्र, धार्मिक उत्सव, स्थापत्य, महामण्डप, गर्भ गृह, अधिष्ठान, जगती, शिखर।

खजुराहो, मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित एक ऐतिहासिक शहर है। यह स्थान विंध्याचल पर्वत श्रृंखला के समीप स्थित है और यहाँ का प्राकृतिक परिवेश हरियाली, पहाड़ियों और जलस्रोतों से समृद्ध रहा है। प्राचीन काल में यह क्षेत्र व्यापारिक मार्गों से जुड़ा हुआ था, जिससे यहाँ आर्थिक और सांस्कृतिक समृद्धि आई। खजुराहो की भौगोलिक स्थिति इसे एक शांत, एकांत और धार्मिक वातावरण प्रदान करती है। यही कारण था कि चंदेल शासकों ने इसे अपने धार्मिक एवं सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित किया।

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

खजुराहो मंदिर का निर्माण **9**वीं-**12**वीं शताब्दी के मध्य चंदेलवंश के शासकों द्वारा किया गया। चंदेल शासक कला, धर्म और स्थापत्य के महान संरक्षक थे। उन्होंने खजुराहो को

मंदिर-निर्माण की एक महान प्रयोगशाला के रूप में विकसित किया। खजुराहो में लगभग **85** मंदिरों का निर्माण हुआ था, जिनमें से आज लगभग **25** मंदिर ही सुरक्षित अवस्था में बचे हैं।**1** इन मंदिरों में शैव, वैष्णव और जैन धर्म से संबंधित मंदिर शामिल हैं, जो तत्कालीन धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक बहुलता को दर्शाते हैं।

लक्ष्मण मंदिर इस समूह का सबसे प्राचीन और प्रतिष्ठित मंदिर है, जिसका निर्माण चंदेल शासक यशोवर्मन ने **930-50** ई. के मध्य करवाया था।**2** यशोवर्मन न केवल एक कुशल प्रशासक थे, बल्कि वे कला और धर्म के महान संरक्षक भी थे। उनके शासनकाल में खजुराहो ने अभूतपूर्व सांस्कृतिक उत्कर्ष प्राप्त किया। पूर्वमुखी लक्ष्मण मंदिर का कुल आकर **85’ x 44’** है और इसकी ऊंचाई **80’** है। मंदिर के तीन मुख्य भाग हैं - आधारशिला (आधिष्ठान), दीवार (जंघा) और शिखर (छत)। इसके अतिरिक्त, जिस

चबूतरे (जगती) पर यह मंदिर स्थित है, वह भी एक भाग है। मंदिर की आधारशिला ऊंची है और उस पर मानव गतिविधियों, महिमा के मुखौटे (ग्रासपट्टिका) और ज्यामितीय आकृतियों को दर्शाने वाली कई अलंकृत नक्काशी हैं। लक्ष्मण मंदिर भगवान विष्णु के वैकुंठ स्वरूप को समर्पित है। यह मंदिर वैष्णव परंपरा का प्रमुख केंद्र रहा। उस समय वैष्णव और शैव परंपराएँ समान रूप से विकसित थीं और चंदेल शासकों ने दोनों का संरक्षण किया। यह मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं था, बल्कि यह धार्मिक शिक्षण, अनुष्ठान, उत्सव और सांस्कृतिक गतिविधियों का भी केंद्र था।

पंचायतन शैली में बना हुआ यह मंदिर खजुराहो में अब प्राप्त सभी मंदिरों में सबसे सुरक्षित स्थिती में स्थित है। ऐसी मान्यता हैं कि लक्ष्मण वर्मन ने मथुरा से **16** हजार शिल्पकारों को इस मंदिर के निर्माण के लिए बुलवाया था तथा लगभग **7** वर्ष की अवधि में उन्होंने यह मंदिर बनाकर तैयार किया था। मतंगेश्वर मंदिर से उत्तर की ओर स्थित यह मंदिर भगवान विष्णु का मंदिर है तथा वैकुण्ठ का प्रतीक है। गर्भगृह में स्थित भगवान विष्णु को प्रतिमा भी उनके इसी विशेष रूप से दिखलाती है। यह मंदिर सान्धार है तथा पंचायतन शैली मे बना है यही एक मात्र ऐसा मंदिर है, जिसका चबूतरा भी अपनी प्रारम्भिक स्थिती में सुरक्षित है। चबूतरे के ऊपर चारों कोनों में चार उप मंदिर है जो कि प्रमुख देवताओ पारिवारिक देवताओं को दिखलाते है तथा मंदिर के ठीक सामने भी एक छोटा मंदिर है जो कि भगवान विष्णु के वाहन गरूण का मंदिर रहा होगा। अब उसमें देवी ब्रहमाणी की प्रतिमा है तथा लक्ष्मी मंदिर के नाम से जाना जाता है। इन्हीं पांच उप-मंदिरों से सुसज्जित होने के कारण यह पंचायतन शैली का खजुराहो में बना हुआ पहला मंदिर है। प्रमुख मंदिर के प्रवेश द्वार पर भगवान सूर्य की अदिती रूप में प्रतिमा है उन्हें हाथ में कमल के दो फुल लिये रथारूढ दिखलाया गया है।**3** चबूतरे के दक्षिण पूर्वी कोने के उपमंदिर मे गजलक्ष्मी की प्रतिमा है। प्रमुख मंदिर पर एक विहंगय दृष्टि डालने से ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि पूर्ण मंदिर चन्दन की लकड़ी का बनाकर तैयार किया गया है। जबकि मंदिर बालू पत्थर का बना हुआ है। मंदिरों का निर्माण मानचित्रों के अनुसार छोटे-छोटे टुकड़ों में **30** किलोमीटर की दूरी पर केन नदी के पूर्वी किनारों पर स्थित बालू पत्थर की खादानों मे हुआ। प्रत्येक स्तर के लिये विशेष तरह की साज-सज्जा विचार का शिल्कार ने छोटे-छोटे टुकड़ों में उन्हे गढ़ा तथा उन टुकड़ों पर संख्या अंकित कर उन्हें खजुराहे भेजा और यहां उन्हें उनकी संख्याओं के अनुसार नीचे से ऊपर की ओर जोड़-जोड़कर, पहले वेदी बंध फिर दीवार एवं उसके ऊपर शिखरों के रूप में इन्हें बनाया। प्रमुख मंदिर की बायें से दायें ओर की परिक्रमा में हमें सर्वप्रथम विध्नेश्वर भगवान गणेश की प्रतिमा देखने को मिलती है। जग़ती से वेदीबन्ध तक हमें बेलबूटों एवं कीर्तिमुख तथा हाथियों की एक लाइन दिखलाई देती है।उसके ऊपर छोटी डोटी प्रतिमाओं की दो लाइनें है जिनमें नृत्य संगीत, शिकार, युद्ध,

मैथुन इत्यादि के दृश्य है। यह कहा जा सकता है कि इन लाइनों में उस युग की झांकियां है। जिसमें यह मंदिर निर्मित हुये इन्हें देखकर उस समय के रहन-सहन रीति-रिवाज व परंपराओं को जाना जा सकता है। छोटी-छोटी प्रतिमाओं की इन दो लाइनों से ऊपर प्रमुख दीवार प्रारभं होती है जिस पर प्रमुखतः बड़ी प्रतिमाओं की दो लाइने बनी हुई है। ये प्रतिमायें **22** फिट ऊंची है। कतारो के मध्य की मूर्तियां प्रमुखतः चतुर्भुजी है अर्थात देवप्रतिमाये है ऊपर की कतार में विष्णु तथा नीचे की कतार मे शिव की प्रतिमाये अपने विशेष चिन्हों यथा विष्णु शंख, चक्र, गदा, पद्म एवं शिव त्रिशूल, नाग, रूद्राक्ष की माला व कमण्डल के. साथ, प्रमुखतः अभय तथा वरद मुद्राओं मे दिखलाये गये है। इन चतुर्भुजी देव प्रतिमाओं के दोनों ओर संसार प्रसिद्ध सुर-सुन्दरियों, देव दासियों नाग, कन्याओ इत्यादि की विभिन्न भाव भंगिमाओं में प्रतिमाये है। इनमें से दक्षिण पूर्वी कोने की विष्णु के दाहिने ओर की नायिक्का आलस मुद्रा में, उसी के नीचे शिव के दाहिने ओर की नायिका स्नान के बाद बालो को निचोड़ते हुये तथा इसी कोने में दृष्टव्य ऊपर की ही कतार में प्रेम पत्र लिखते हुये नायिका का चित्रण विशेष उल्लेखनीय है आगे बढ़कर हम आल की कार्तिकेय भगवान की मूर्ति को पार करते हुये मंदिर की मध्य दीवार को देखते है। इन प्रमुख दो कतारों के ऊपर मध्य में अग्नि देवता का चित्रण हुआ है। उनके नीचे मध्य मे चार देव गन्धवों को दिखलाया गया है तथा सबसे नीचे रानी तांत्रिक पुरोहित एवं योगिनी के साथ की उत्तरी दीवार पर इन्हीं लोगों के समूह को इस अनुष्ठान की दूसरी क्रिया सम्पन्न करते हुये दिखलाया गया है।**4** नायिकाओं में ऊपर की कतार में जहां देव तथा गन्धर्वा को दिखलाया गया है, उसके दाहिने ओर ही कालिदास की नायिका शकुन्तला का चित्रण किया गया है। जो कि अपने बालों को निचोड़ रही है एवं उसके पांव के पास है हंसो के एक जोडे को दिखलाया गया है जो कि इस धोके में कि शकुंतला के शरीर से पानी की बूंदे नहीं वरन् मोती टपक रहे है, उन्हें चुगने को चले आये है। यह कल्पना कवि कालिदास ने अपने ग्रंथ अभिज्ञान शकुन्तलम् में की है कि शकुंतला इतनी सुन्दर थी कि जब वह स्नान कर सरोवर से निकलती थी तो पानी की बूंदे उसके शरीर पर यूं प्रतीत होती थी जैसे मोती, और हंस उसके पीछे दौड़े चले आते थे। देव गंधों के बाये ओर एक नायिका का चित्रण है जो एक उत्तरीय शरीर पर धारण किये है तथा उसके अतिरिक्त पूर्ण नग्न हे। इसके हाथों में भिक्षा पात्र तथा एक दण्ड है यह तांत्रिकों के कोला समूह की योगिनी है, जो कि शरीर पर केवल एक छोटी उत्तरीय धारण कर विचरण किया करती थी एवं भिक्षाटन द्वारा निवाह करती थी। इसी दक्षिणी मध्य दीवार पर नीचे की लाइन मे राजा-रानी के आलिंगन के बाये ओर एक नायिका को अपनी बांह के नीचे पीठ पर नख चिंह देखते हुये दिखलाया गया है जो कि वात्सायन के कामसूत्र के उस सिद्धांत को पुष्टी करता है जिसके अनुसार नायक नायिका को एक दूसरे को काम उत्तेजित करने

के लिये नख-दन्त इत्यादि का प्रयोग करना चाहिये। इसी प्रतिमा के दाहिने और शिव की प्रतिमा के पश्चात् एक देवदासी का चित्रण है जो कि अपने दाये हाथ पर एक तोते को बिठाये हुए है।

माना जाता हैं कि,पुराने समय में खजुराहो नगर में देवदासियां एवं नगर वधुये भी रहा करती थी जिनसे मिलने सैनिक सामन्त शांति के समय में आया करते थे। **64** कलाओं में पारंगत इन देवदासियों का प्रतीक यही तोते हुआ करते थे जो कि इनके घरो के दरवाजो पर पिंजड़ों में लटके रहा करते थे ओर इन्हे देखकर सैनिक सामन्त यह जाना करते थे कि यह घर किसी देवदासी या नगर वधु का है। इसी पंक्ति में कोने की एक मैथुन मुद्रा के बाद पांव में से कांटा निकालते हुये एक नायिका का बहुत सुन्दर चित्रण हुआ है। इसके अतिरिक्त भी कई उल्लेखनीय प्रतिमाये यथा शकुन्तला के दाहिने ओर मां बालक को नौकर से लेते हुये इत्यादि बनी हुई है,सभी प्रतिमाये बहुत ही भाव प्रवण है। मंदिर के दक्षिण पश्चिमी कोने पर उपमंदिर के अन्दर भगवान विष्णु की शेषशायी प्रतिमा है। प्रमुख मंदिर की दीवार के इस कोने पर भी कुछ बहुत ही संसार प्रसिद्ध

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

प्रतिमाये है, दक्षिणी कोनो में नीचे की ओर एक युगल दृष्टव्य है जो कि प्रेमालाप की मुद्रा में है एवं नायक के प्रश्न का उत्तर देते हुए नायिका को दिखलाया गया है, दोनों ही नग्न है। इनके ही दाहिने ओर एक गणिका का बड़ा ही सजीव चित्रण है जो कि गाना गा रही है। मध्य में शिव है एवं उनके दाहिने ओर की नायिका को आइने में मुख देखकर मांग में सिंदूर भरते हुये दिखलाया गया है। इसके ऊपर की कतार में दाये ओर नायिका को कुंदक क्री क्रीड़ा करते हुये दिखलाया गया है। नायिका की मांसल देहव्यष्टि चित्रण किस तरह से शिल्पकार ने किया है यह दृष्टत्य है। मध्य मे भगवान विष्णु है एवं उनके बाये ओर नायिका है जो कि कपड़ो को धारण कर रही है। इस युग में बहुत ही अच्छे प्रकार के वस्त्र तो हुआ करते थे किन्तु उनकी सिलाई का कोई प्रावधान नहीं था ऐसा प्रतीत होता है नायिकाये वक्ष स्थल को ढकने के लिये कुंचकी बांधा करती थी। नीचे के वस्त्रों को चांदी एवं सोने के बने हुये कटिबन्धों द्वारा बांधा करती थी। दक्षिण पश्चिमी कोने में तांत्रिकों में से कापालिक समूह की एक नायिका का चित्रण नीचे की लाइन में विष्णु के दाहिने ओर हुआ है जिसके हाथ में दण्ड व कपाल भी बना हुआ है। इसके अतिरिक्त इस कोने में एक युगल एवं आलस मुद्रा में अंगड़ाई लेते हुये एक नायिका भी उल्लेखनीय है। कोने की छोटी लाइने भी दर्शनीय है, जिनमे युद्ध, शिव पूजन, आखेट एवं मैथुन इत्यादि क्रियाओं के दृश्य दिखलाये गये है। मंदिर के पीछे की ओर पश्चिमी आले मे भगवान सूर्य की ही प्रतिमा मिलती है। खजुराहो की सभी सूर्य प्रतिमाये समभंगा मुद्रा में है जबकि अन्य प्रतिमाये (गर्भगृहों की प्रमुख देव प्रतिमाओं के अतिरिक्त) तिभृगा मुद्रा है। मंदिर के उत्तर पश्चिमी कोने के उपमंदिर का गर्भगृह खाली है इसमे कोई प्रतिमा नहीं है।**5**

प्रमुख मंदिर की उत्तर पश्चिमी दीवार पर की प्रसिद्ध प्रतिमाओं में पश्चिमी कोने पर स्नान करते हुए अपनी पीठ को स्पर्श करने का प्रयास करते हुए नायिका बहुत ही सुन्दर है इसी के और दाहिने ओर शिव के उपरांत एक नायक एवं नायिका को खजूर की सुरा (ताड़ी) पान करते हुए दिखलाया गया है दोनों के भावो से लगता है दोनों ही मदमस्त है इन्हीं के पार्श्व में ताड़ का वह वृक्ष भी दिखलाया गया है जिससे प्राप्त सुरा का वह पान कर रहे है। उत्तर पश्चिमी कोने में एकदम कोने की नीचे की लाइन की

दीवार पर पुताई करते हुए नायिका एवं ऊपर की लाइन की काम विह्वल नायिका जहां वह अपने कपड़ो को अलग करते हुए दिखलाई गई है उल्लेखनीय है और आगे बढ़ते हुए मंदिर की उत्तरी मध्य दीवार पर दक्षिणी मध्य दीवार की भांति ही सबसे ऊपर मध्य में अग्नि देवता है। उनके नीचे चन्द्रमा एवं हेमवती को दिखलाया गया है, यह प्रतिमा उस किववदन्ती का समर्थन करती है जिसके अनुसार चन्द्रमा हेमवती के सौन्दर्य से

आकर्षित होकर पृथ्वी पर अवतरित हुए थे। हेमावती के बाएं हाथ में दूज का चन्द्र दिखलाया गया है-क्यूंकि धारणा है चन्द्रमा पृथ्वी पर दूज की रात्री को ही वतरित हुए थे। उसके नीचे ही मध्य में राजा-रानी,तांत्रिक एवं योगिनी का वही समूह है जो दक्षिणी ओर था यहां तांत्रिक के साथ एक उपनायिका एवं अन्य पुरूष की उपस्थिति भी दिखलाई गई है यह मैथुन संबंधी उसी अनुष्ठान की आगे की क्रियाओं का चित्रण है जो दक्षिणी ओर दिखलाया गया है। यहां की कुछ और उल्लेखनीय प्रतिमाओं में दाहिने ओर एकदम कोने में एक युगल को दिखलाया गया है जो कि एक हाथ से नायिका को आलिंगन में लिए हुए है एवं दूसरे हाथ में एक छड़ी लिये हुये बन्दर को भगा रहा है। नायिका बंदर से डर कर नायक के पास आई है एवं नायक उसे आश्वासन दे रहा है। नीचे की इसी कतार मे बांये ओर नायक नायिका को मदिरा पान कर नृत्य करते हुये दिखलाया गया है।

लक्ष्मण मंदिर के उत्तरी मध्य में बेदीबन्ध के ऊपर जहां हाथियो की लाइन है बाये ओर के कोने में एक प्रतिमा उल्लेखनीय हे जहां एक तांत्रिक को एक नायिका के साथ एक विशेष मैथुन मुद्रा में दिखलाया गया है एवं हाथी उनकी ओर देखकर जैसे की हंस रहा है। इस प्रतिमा की विशेषता जिसने इस संपूर्ण संसार में प्रसिद्धि पाई है, तांत्रिक के द्वारा नायिका की पीठ पर काम के बिन्दू की खोज करना है। इस काम के बिन्दू के शरीर में स्थित होने के बारे में प्रचलित एक मत है कि स्त्री एवं पुरूष के शरीर में काम का एक ऐसा बिन्दू होता है जो कि चन्द्रमा के साथ शरीर में चढ़ता एवं उतरता रहता है, जब अमावस्या की रात्रि होती है तो यह बिन्दु पांव में होता है और जैसे-जैसे चन्द्रमा की कलाऐ बढ़ती है यह ऊपर को चढ़ता है एवं पूर्णिमा के समय सिर में आ जाता है। विचार है कि इसे खोजकर उकसाने से काम उत्तेजना पूर्ण होती है एवं क्रिया का पूर्ण आनंद प्राप्त होता है। उसी बिन्दू को खोजते हुये इस प्रतिमा में तांत्रिक को दिखलाया गया है। खजुराहो के मंदिरों पर अंकित तांत्रिको की पहचान उनके द्वारा धारण की हुई केश शैली है। इस युग मे साधारणतः सभी पुरूष एवं स्त्रियां बड़े बाल रखा करते थे केवल तांत्रिक ही बालो को बहुत छोटा काटा करते थे एवं बगैर कोई वस्त्र धारण किये गांव से गांव शहर से शहर विचरण किया करते थे। इनके हाथों में मुगदर के प्रकार का एक दण्ड एवं एक कमण्डल हुआ करता था। इसी दण्ड, विशेष केश शैली, नग्न अवस्था एवं कमण्डल के द्वारा इन्हें प्रतिमाओं की भीड़ में अलग पहचाना जा सकता है। आगे बढकर उत्तरपूर्वीय कोने के उप मंदिर में भगवान विष्णु की ही चतुर्भुजी प्रतिमा मिलती है। प्रमुख मंदिर की दीवार पर पश्चिमी ओर नीचे की कतार में, बाये कोने मे दीवार पर चित्र बनते हुये नायिका एवं शिव के दाहिने ओर बांसुरी वादन करते हुए नायिका उल्लेखनीय है। मंदिर के अंतिम आले में महिषासुर मर्दनी देवी दुर्गा की अभय मुद्रा में दस भुजी प्रतिमा है।**6**

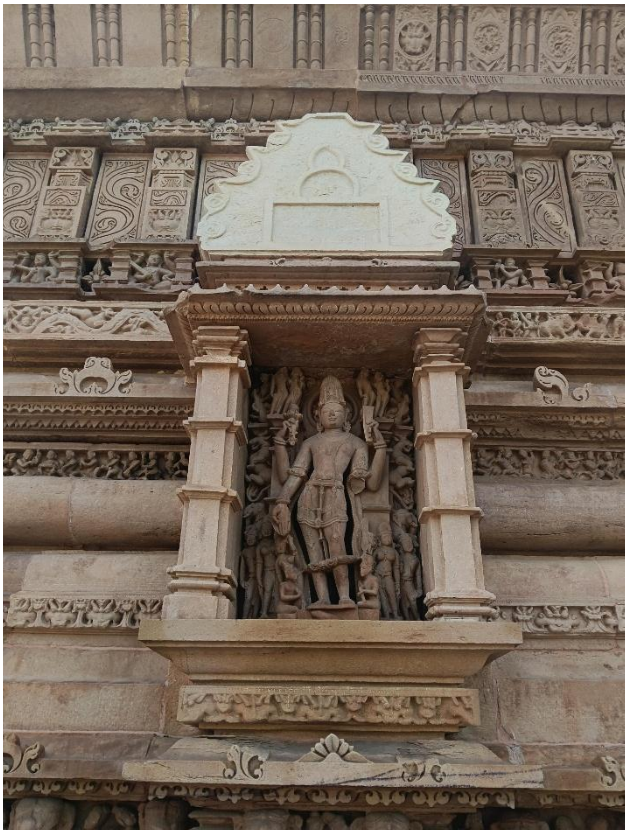

मंदिर प्रवेश द्वार पर शुभागमन का प्रतीक मकरतोरण बना हुआ है जो कि एक ही पत्थर का है। प्रमुख मंदिर को अन्दर से पांच भांगो में देखा जा सकता है-पहला भाग मण्डप- इसमे हमे एक शिलालेख भी मिलता है जो **953** ई. का है यह शिलालेख मंदिर के बाहर पाया गया था इसमे कुछ में भगवान विष्णु की स्तुति है एवं बाकी में धनादेव वर्मन द्वारा अपने पिता श्री यशोवर्मन या लक्ष्मण वर्मन के गुणों का उल्लेख है। मंदिर का दूसरा भाग महामण्डप चार स्तम्भों एवं एक नृत्य के लिये बने हुए चबूतरे के रूप में दृष्टव्य है। तीसरे भाग अन्तराल को मंदिर का वह हिस्सा कहा जाता है जो महामण्डप एवं गर्भसृह के जुड़ने से बना है। खजुराहो के मंदिर से पहले, मंदिरों के महामण्डप एवं गर्भगृहों को पृथक-पृथक बनाने की परम्परा थी। पहली बार लक्ष्मण मंदिर में ही दोनों को जोड़ा गया। अन्तराल मंदिर के गर्भगृह के सामने बैठने लायक एक चबूतरा है जिस पर बाई ओर बैठकर पुजारी लोगों को धार्मिक अनुष्ठान करने में सहायता दिया करते थे।7

गर्भगृह में एक साधारण कक्ष है जिसकी चौड़ाई 7 फुट 3 इंच है और इसमें वर्गाकार खंड के चार स्तंभ हैं जिनमें चारों दिशाओं में ऑफसेट हैं। इनके निचले और ऊपरी हिस्सों में कलश और पत्तियाँ बनी हुई हैं और इन पर सामान्य रूप से अलंकृत शीर्ष हैं जिनके ऊपर सादे नक्काशीदार प्रोफाइल वाले ब्रैकेट लगे हैं। गर्भगृह में भगवान विष्णु के वैकुण्ठ रूप को दिखलाता है। इस मूर्ति के बारे में किवदन्ती है कि काश्मीर नरेश ने बनवाकर यह प्रतिमा लक्ष्मण वर्मन को भेंट की थी। नरसिंह एवं बराह के मुखों के साथ दिखलाई गई भगवान विष्णु की यह तीनमुखी प्रतिमा है, इस तरह की भगवान विष्णु की प्रतिभा खजुराहो के अन्यन्त्र कहीं देखने को नहीं मिलती। गर्भगृह के प्रवेशद्वार पर सभी मंदिरों की भांति तीन लोकों का चित्रण मिलता है। किन्तु जहां मृत्युलोक का अंकन है वहां भगवान विष्णु के विभिन्न अवतारों को दर्शाया गया है। प्रवेशद्वार के दाएँ एवं बाऐ जय एवं विजय जो के बैकुण्ठ के द्वारपाल है, भी दिखलाए गए हैं। मंदिर के पांचवे भाग को प्रदक्षिणा पथ कहा गया है। यह मंदिर का वह भाग है जो आन्तरिक मंदिर एवं बाह्य मंदिर को पृथक करता है एवं मंदिर की परिक्रमा करने के उद्देश्य से बनाया गया है। इसमें प्रवेश कर आप आन्तरिक मंदिर की सुन्दर शिल्पकारी को देख सकते है। यहां भी प्रतिमाओ की दो लाइने दिखलाई गई है। इनमे से ऊपरी लाइन मे भगवान श्रीकृष्ण के जीवन की लीलाओं का चित्रण हुआ है इनमे से कालिया मर्दन, कुवल्यपीड वध एवं चाणूर वध, इत्यादि उल्लेखनीय है मंदिर के उत्तरी भाग में पूतना

वध का चित्रण भी बहुत ही सजीव हुआ है। अन्दर के प्रमुख आलो में दक्षिण की ओर भगवान विष्णु के भू-वराह रूप पश्चिम की ओर नरसिंह एवं उत्तर की ओर हयग्रीव अवतारों को दिखलाया गया है।

नीचे की लाइन की प्रतिमाओं में आठ कोनों में अष्ट दिग्पालो इन्द्र, अग्नि, यम, निरूति, वरूण, वायु, कुबेर एवं ईशान की प्रतिमाये है। लक्ष्मण मंदिर खजुराहो के सभी मंदिरों से अच्छी स्थिति में है इस मंदिर का चबूतरा अब भी अपने मूल रूप मे बगैर किसी क्षति के स्थित है मंदिर के बाहर आकर चबूतरे से उतर कर हम नीचे से मंदिर की एक बाह्य परिक्रमा ले सकते है। दाऐ से बाएं ओर की परिक्रमा में हमे करीब एक फुट ऊंची प्रतिमाओं की एक लाइन देखने को मिलती है, जिसमे उस युग की जिसमे यह मंदिर बना था जन जीवन की झांकियां है। करीब साढ़े चार फुट लम्बे बने हुए इन पत्थर के खंडों में दैनिक जीवन से सम्बन्धित सभी कृत्यो को दिखलाया गया है इनमे पहले, जूते पहने हाथ में भाल इत्यादि लिये घुड़सवारों को शिकार पर जाते दिखलाया

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

गया है। आगे कुछ व्यापारीगण व्यापार के लिए जाते दिखलाये गये है एकदम कोने में युद्ध के दृश्यों का चित्रण है। चबूतरे की पूर्वी लाइन एकदम खाली पड़ी हुई है कहते है यहां के पैनल ब्रिटिश काल में भारत एवं विदेशों के संग्राहलयों में भेजने के लिए निकाल लिये गये थे। दक्षिण पूर्वी कोने के तीन पैनलों में पूर्णिमा की रात्रि के सामूहिक सम्भोग के दृश्य विशेष उल्लेखनीय है।**8** इनमें दूसरे पैनल के मध्य में तांत्रिको द्वारा पंच मकार के निर्माण की क्रिया को दिखलाया गया है किस प्रकार वह पंच मकार बनाया करते थे एवं इस पंच मकार को पीने के उपरान्त विथिन्न मुद्राओं मे सामूहिक मैथुन को सम्पन्न किया करते थे। आगे चलकर आखेट के दृश्य मिलते है। फिर एक संगीत के अध्यापक को अपने शिष्यों को नृत्य एवं संगीत की शिक्षा देते हुये दिखलाया गया है। यही घोड़ी के साथ संभोग करते हुए सैनिक की सबसे विचित्र प्रतिमा भी है। क्योंकि युद्ध के मैदान में स्त्रियां नहीं होती थी इसलिए यदा कदा सैनिक इन छोटे कद की घोड़ियों का प्रयोग करते थे और आगे चलने पर एक धर्म उपदेशक को अपने शिष्यों को धम्र उपदेश देते हुए दिखलाया गया है। इसके कुछ आगे चलकर विवाह का दृश्य है। एवं फिर सैनिक सामन्तो को आवागमन करते हुए दिखलाया गया है। जहां उन्हें जंगल से होकर जाते हुए दिखलाया गया है वहां जंगल की स्थिती दिखलाने के लिये उनके पांव के पास जंगली जानवरों के सुअरों, हिरनो इत्यादि का चित्रण किया गया है।**9**

दक्षिण पश्चिमी ओर इस लाइन में प्रमुखतः सैनिक सामन्तों का आवागमन एवं आखेट इत्यादि ही दिखलाया गया है। उत्तर की और प्रमुखतः युद्ध इत्यादि के ही यह दृश्य ज्यादा है। उत्तरी पूर्वी कोने में दो राजाओं को स्नान के पूर्व ललित आसन मुद्रा में बैठे हुए दिखलाया गया है। पूर्वी ओर लक्ष्मण वर्मन को शयन करते हुये दिखलाया गया है। एवं अन्ततः इसी लाइन में उत्तर पूर्व के एक पैनल में शिल्पियों को भी दिखलाया गया जिनके हाथों में छैनी हथौड़ी है जिनसे इन शिल्पियों ने ये अनूठे मंदिर गढ़े। इसी पंक्ति में दो रेगिस्तान का जहाज़ ऊंटों की मूर्ति प्राप्त होती हैं जो कि विचित्र बात लगती हैं क्योंकि इसी लक्ष्मण मंदिर से ही प्राप्त होता है, अन्य किसी भी खजुराहो के मंदिर में नहीं मिलता हैं। इन दोनों ऊंटों में से एक आगे वाले पर व्यक्ति बैठकर ऊंट को हॉक रहा हैं। एक विशेष बात यह भी है कि बुंदेलखंड में ऊंटों की प्राप्ति। एक अन्य विचित्र मूर्ति इसी लक्ष्मण मंदिर से प्राप्त होता है जो किसी यूरोपीय व्यक्ति की या कुषाण कालीन मूर्तिकला का उदाहरण प्राप्त होती हैं।**10**

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि, लक्ष्मण मंदिर पर्यटन, शिक्षा और शोध का भी एक प्रमुख केंद्र है, जहाँ प्रतिवर्ष लाखों देशी-विदेशी पर्यटक और शोधार्थी आते हैं। लक्ष्मण मंदिर केवल एक ऐतिहासिक स्मारक नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति का जीवंत प्रतीक है। इसकी स्थापत्य कला, मूर्तिकला, धार्मिक प्रतीकात्मकता और सामाजिक संदेश इसे विश्व धरोहर की श्रेणी में प्रतिष्ठित करते हैं। यह मंदिर हमें

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

भारत की प्राचीन कलात्मक प्रतिभा, दार्शनिक गहराई और सांस्कृतिक समृद्धि का बोध कराता है। लक्ष्मण मंदिर वास्तव में भारतीय सांस्कृतिक विरासत का एक अमूल्य रत्न है, जिसे संरक्षित रखना और आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाना हमारा सामूहिक दायित्व है।

सन्दर्भ सूची

1. अवस्थी, रामाश्रय : *खजुराहो की देव प्रतिमाएं,* आगरा, 1967, पृष्ठ-11
2. कृष्णदेव : *खजुराहो,* नई दिल्ली, 1991, पृष्ठ - 26
3. देसाई, देवांगना : *द रिलीजियस इमेजरी ऑफ़ खजुराहो,* मुम्बई,1996, पृष्ठ - 21
4. कृष्णदेव : *खजुराहो,* नई दिल्ली, 1991, पृष्ठ - 66
5. उपर्युक्त : पृष्ठ - 68
6. मिश्रा, आभा : *मध्यकालीन मूर्तियों में शास्त्रीय नृत्य परम्परा,* IHC भुवनेश्वर, 1997, पृष्ठ- 150
7. अवस्थी, रामाश्रय : *खजुराहो की देव प्रतिमाएं,* आगरा, 1967, पृष्ठ-32,33
8. प्रकाश, विद्या : *खजुराहो द स्टडी इन द कल्चरल कंडीशंस ऑफ़ चंदेल सोसायटी,* मुम्बई,1967, पृष्ठ - 108, 110
9. कृष्णदेव : *खजुराहो,* नई दिल्ली, 1991, पृष्ठ - 63
10. उपर्युक्त : पृष्ठ - 68